E-ISSN 2582-5429
SJIF Impact - 5.675

AKSHARA

MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
January 2024 Special Issue 10 Volume II (A)

हिंदी साहित्य की सामाजिक एवं लोकतांत्रिक भूमिका नये संदर्भ

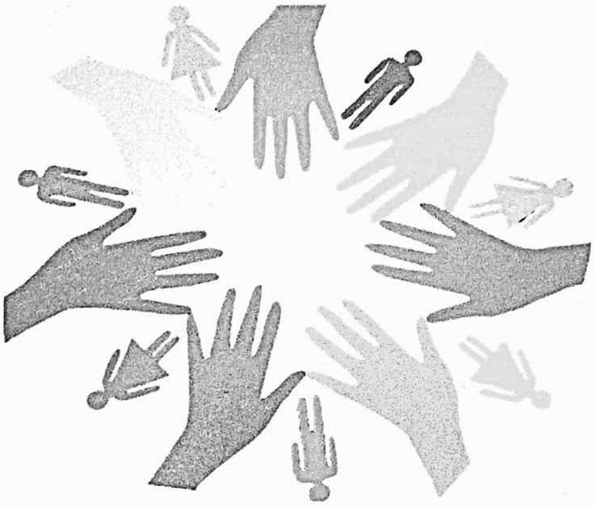

अतिथि संपादक
प्रो.डॉ.पी. एम. डोंगरे
प्राचार्य
लोकनेते डॉ.बालासाहेब विखे पाटील (पद्मभूषण उपाधि से सम्मानित)
प्रवरा ग्रामीण शिक्षण संस्था का कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, सात्रल
तह.राहुरी, जि. अहमदनगर (महाराष्ट्र)

कार्यकारी संपादक

डॉ. गजानन चव्हाण प्रधान सचिव
प्रो.डॉ. जिजाबराव पाटील अध्यक्ष
महाराष्ट्र हिंदी परिषद

डॉ. भाऊसाहेब नवले अध्यक्ष, हिंदी विभाग
डॉ. अनंत केदारे सह-आचार्य
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, सात्रल

Chief Editor :
Dr. Girish S. Koli

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal

E- ISSN 2582-5429 / SJIF Impact- 5.67 / January 2024 / Special Issue 10 / Vol. II (A)

Index

Sr.No	Title of the Paper	Author's Name	Pg.No
1	हिंदी ग़ज़लों में सामाजिक भूमिका के नये संदर्भ	डॉ. मधु खराटे	05
2	हिंदी नाट्य साहित्य की सामाजिक भूमिका : नए सन्दर्भ (औरत की जंग नाटक के विशेष सन्दर्भ में)	प्रो.संजयकुमार शर्मा	12
3	हिंदी उपन्यासों मे चित्रित सामाजिक -आर्थिक समस्या	प्रो. डॉ.बाबासाहेब कोकाटे	16
4	हिंदी काव्य की सामाजिक एवं लोकतंत्रिक भूमिका : नये संदर्भ	डॉ. अनिल काळे	20
5	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी ग़ज़ल की सामाजिक एवं लोकतांत्रिक भूमिका : नये संदर्भ	प्रो.रजनी शिखरे / संतोष नागरे	24
6	रामावतार त्यागी और सुरेश भट की ग़ज़लों में अभिव्यक्त सामाजिक-राजनीतिक चेतना का तुलनात्मक अध्ययन	प्रा.विजय लोहार डॉ.सुनील कुलकर्णी	27
7	हिंदी साहित्य की काव्य विधा में सामाजिकता : ज्ञानप्रकाश विवेक के विशेष संदर्भ में	डॉ. सुनीता नारायणराव कावळे	33
8	हिन्दी कथा-साहित्य की सामाजिक एवं लोकतांत्रिक भूमिका : नये संदर्भ	डॉ. दादासाहेब खांडेकर	37
9	समकालीन हिंदी नाटक की सामाजिक भूमिका	डॉ. ईश्वर पवार	40
10	कोंपलें काव्य संग्रह में लोकतान्त्रिक मूल्य	डॉ. मोहम्मद शाकिर शेख	42
11	21 वीं शती के हिन्दी उपन्यासों में चित्रित समाज	प्रा.डॉ.शिवाजी उत्तम चवरे	44
12	'नयी सदी के स्वर': सामाजिक एवं लोकतांत्रिक भूमिका के नये संदर्भ	डॉ. दीपक रामा तुपे	47
13	हिंदी कथा साहित्य की सामाजिक एवं लोकतांत्रिक भूमिका :- नए संदर्भ	डॉ. रीतू भटनागर	51
14	धूमिल के काव्य में व्यक्त सामाजिक एवं जनवादी भूमिका : नये संदर्भ	डॉ.अनिता वेताळ /अंत्रे	54
15	लोकतांत्रिक व्यवस्था में किन्नरों के संवैधानिक अधिकारों का हनन ('पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा' उपन्यास के संदर्भ में)	डॉ. भास्कर उमराव भवर	57
16	"सुधा अरोड़ा के कथा साहित्य में 'लोकतंत्र' की भूमिका"	कु.निलोफर खाजाहुसेन पल्ला डॉ.अनिल मारुति साळुंखे	60
17	हिंदी उपन्यासों में सामाजिकता और लोकतंत्रात्मक भूमिका	डॉ . अमलपुरे सूर्यकांत विश्वनाथ	63
18	लोकतांत्रिक व्यवस्था में किन्नरों का स्थान ('तीसरी ताली' उपन्यास के संदर्भ में)	प्रा. संपतराव सदाशिव जाधव	67
19	हिन्दी कथा साहित्य की सामाजिक एवं लोकतांत्रिक भूमिका	डॉ. हिमानी भाटिया	70
20	गोविन्द मिश्र के उपन्यासों में राजनीति, धर्म और विद्रोह-वृत्ति का वर्णन	डॉ. जयशंकर रामजीत पाण्डेय	73
21	हिंदी साहित्य में लोकतंत्र	डॉ.ज्योतिबाबू जैन	79
22	सुशीला टाकभौरे की कहानियों में दलित चेतना	प्रा.डॉ.हनुमंत दत्तु शेवाळे	83
23	हिंदी काव्य की सामाजिक एवं लोकतांत्रिक भूमिका : नये संदर्भ	डॉ. संगीता दिपक माळी	88
24	डॉ. कृष्ण कुमार मिश्र के वैज्ञानिक साहित्य में सामाजिक सरोकार	डॉ. सपना तिवारी	91
25	दुष्यंतकुमार के ग़ज़ल साहित्य की सामाजिक एवं लोकतांत्रिक भूमिका : नये संदर्भ में	डॉ. रज़िया शहेनाज़ शेख अब्दुल्ला	94
26	'दौड' उपन्यास में चित्रित वृद्ध विमर्श	प्रा.दिलीप पंडीत पाटील	97
27	कोरोना परिप्रेक्ष्य में समाज की मनोवैज्ञानिक चुनौतियाँ एवं साहित्य की भूमिका	डॉ. प्रवीणकुमार नरसाप्पा चैगुले	99
28	हिंदी कथा साहित्य की सामाजिक एवं लोकतांत्रिक भूमिका : नये संदर्भ	प्रो.डॉ.पाटील पी.एस.	104
29	'हिंदी साहित्य में लोकतंत्र की अभिव्यक्ति'	प्रो.डॉ.शेख शहेनाज अहेमद	109
30	हिंदी साहित्य की सामाजिक एवं लोकतांत्रिक भूमिका	प्रा. डॉ. ऐनूर एस.शेख	114
31	धूमिल की सामाजिक एवं लोकतांत्रिक भूमिका	डॉ. अनंत केदारे	117

AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
E- ISSN 2582-5429 / SJIF Impact- 5.67 / January 2024 / Special Issue 10 / Vol. II (A)

29

'हिंदी साहित्य में लोकतंत्र की अभिव्यक्ति

प्रो.डॉ.शेख शहेनाज अहेमद
हिंदी विभाग प्रमुख
हु.जयवंतराव पाटील महाविद्यालय हिमायतनगर

सारांश :–

लोकतंत्र की स्थापित करने और उसे बनाए रखने में साहित्यकार की विशिष्ट भूमिका होती है। लोकतंत्र और साहित्य के संबंधो के विभिन्न स्तर और आयाम का अवधारणात्मक अध्ययन और मानव संबंध के विभिन्न संदर्भ में उनका पूरा विवेचन आज के साहित्य विमर्श की अनिवार्य जरूरतों में से एक महत्वपूर्ण जरूरत है। हर देश का साहित्य वहाँ के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक पक्षों से प्रभावित होता है। और इसका चित्र वहाँ के साहित्य में परिलक्षित होती है। यह स्पष्ट है कि, स्वतंत्रता के पूर्व और स्वतंत्रता के पश्चात लोकतंत्र में काफ़ी बदलाव हो चुका है। भारतीय जनता के सपनों में बाधक बने तत्वों को साहित्यकारों ने साहित्य का विषय बनाकर दिशा दिखाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। ''साहित्यकारों का लोकतंत्र समता, स्वाधीनता और बंधुत्व पर आधारित होता है एक ऐसे संवेदनशील लोकतंत्र की स्थापना साहित्यकारों का उद्देश्य रहा है, जो शोषणविहीन हो, जहाँ जाति, रंग प्रांत एंव धर्म के नाम पर किसी प्रकार के भेदभाव न हो ऐसे लोकतंत्र में आम आप्ती के सपने फलीभूत होंगे।'' साहित्य का उद्देश्य मानवता की रक्षा करना है इसी इर्थ में कहाँ गया है साहित्य मनुष्यता का प्रहरी है। वह मनुष्यता की सभी लड़ाइयाँ अपनी पूरी शक्ति के साथ लड़ता है।

प्रस्तावना :–

लोकतंत्र का शाब्दिक अर्थ है 'लोगों का शासन' है। यह एक ऐसी शासन व्यवस्था है जिसमें जनता अपना शासक खुद चुनती है। इसका प्रयोग राजनीतिक संदर्भ में किया जाता है, तो लोकतंत्र का सिध्दांत दूसरे समूहों और संगठनों के लिए भी संगत है। देखा जाए तो यह लोकतंत्र समाज व्यवस्था के लिए सबसे अच्छी तरकीब है। परंतु इसका विकास राजनीतिक रूप में ही हुआ सामाजिक रूप में नही। शासन प्रणाली के रूप में लोकतंत्र मानव सभ्यता का अब तक का सर्वोत्तम स्वप्न है। सभ्यता के विकास यात्रा में बीसवीं शताब्दी हलचल भरी रही है। लोकतंत्र प्रणाली स्वतंत्रता, समता और बंधुत्व का आश्वासन देती है, इसीलिए उसके प्रति आकर्षण बना हुआ है। लोकतंत्र के मूल्य स्वतंत्रता समता और बंधुत्व प्रकारांतर से साहित्य के बुनियाद मूल्य है। ये वही मूल्य है जिसका स्वप्न आदिमकाल से अब तक हर रचनाकार ने देखा है।

साहित्य में लोकतंत्र :–

प्रत्येक भारतीय नागरीक के रूप में सरकार की आलोचना करने का अधिकार है और इस प्रकार की आलोचना को राजद्रोह के रूप में परिभाषित नही किया जा सकता है। आलोचना के राजद्रोह के रूप में परिभाषित करने की स्थिति में भारत का लोकतंत्र एक पुलिस राज्य के रूप मे परिणत हो जाएगा। लगभग 21 महीने के राष्ट्रीय आपात के बाद जेल से स्वतंत्र हुए स्व.प.अटल बिहारी वाजपेयी के निम्नलिखित कथन से परिलक्षित होता है कि लोकतंत्र में अभिव्यक्ति की महत्ता कितनी अधिक है–

''बाद मुद्दत के मिले है दिवाने,
कहने सुनने को बहुत है अफसाने,
खुली हवा में जरा साँस तो ले लें,
कब तक रहेगी आजादी कॉन जाने।''[1]

मानव मन में तरंगित होने वाली ललित भावनाओं और अनुभूतियों की शब्दों में सार्थक अभिव्यक्ति ही साहित्य है। यह मानव मन की कलापूर्ण रमणीय अभिव्यक्ति है। ''साहित्य का जन्म और विकास मनुष्य के रूप में पशु के साथ–साथ उसकी चेतना, भावना, आकांक्षा के मानवीय पक्ष के जन्म और विकास से भी संबंधित है। मनुष्य के मनुष्य बनने की प्रक्रिया और साहित्य की सृजन प्रक्रिया में कहीं न कहीं भिन्न–भिन्न संबंध है। दरअसल पशु से मनुष्य बनाने की संपूर्ण संघर्ष यात्रा का भाव–साक्षी साहित्य रहा है। मनुष्य का सुख–दुःख में उसका वास्तविक भाव–सहचर साहित्य ही होता है, हमारे पास जो साहित्य आज उपलब्ध है

AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
E-ISSN 2582-5429 / SJIF Impact- 5.67 / January 2024 / Special Issue 10 / Vol. II (A)

वह स्वभावतः एक स्तर पर विकसित मनुष्यय का ही साहित्य है। उसका ज्ञात, लिखित और एकत्रित इतिहास भी उसी विकसित मनुष्य का इतिहास है।"[2]

लोकतंत्र को स्थापित करने और उसे बनाए रखने में साहित्यकार की विशिष्ट भूमिका होती है। लोकतंत्र और साहित्य के संबधो के विभिन्न स्तर और आयाम का अवधारणात्मक अध्ययन और मानव संबंध के विभिन्न संदर्भ में उनका पूरा विवेचन आज के साहित्य विमर्श की अनिवार्य जरूरतों में से एक महत्वपूर्ण जरूरत है। स्वतंत्रता आंदोलन के वक्त लिखे गए राष्ट्रीय चेतना से पूर्ण साहित्य की भूमिका निर्विवाद है। "कोई भी संवेदनशील लेखक अपने समय की अपनी परिस्थितियों और सपने हालात की उपेक्षा करके नहीं जी सकता। वह चाहे कवि हो या गद्यकार, अपने समय का साक्ष्य देने के लिए अविकलन है।"[3]

एक लेखक का लोकतंत्र उसकी साहित्यिक ईमानदारी से जुड़ा होता है। समय के सच की पहचान तथा उसे अभिव्यक्ति प्रदान करना ही एक लेखक की जिम्मेदारी है। जिस समाज में वह जी रहा है, उसमें हो रहे परिवर्तन संघर्ष तथा नवाचार को एक दिशा देने का कार्य साहित्य कर रहा है। जब भी शीर्ष पर संकट आया है तो आशाभरी निगाहें साहित्यकार की ओर उठती है। ये अपेक्षाएँ सिर्फ अभिव्यक्ति ही नही चाहती बल्कि एक विकल्प की चाह रखती है। इन अर्थो में साहित्य का लोकतंत्र समाज के प्रति उसकी उपादेयता तथा सीमाओं की व्याख्या करता है। लेखकिय लोकतंत्र को परिभाषित करते हुए रघुवीर सहाय उसके प्रतिरोध की तीव्रता को इस प्रकार स्पष्ट करते है–

"लोकतंत्र में बोलने की आजादी ही एक विषय नही है। उस हद तक जीने की आजादी चाहिए जिस हद तक सरकारों को कवि की बोली अन्याय के संगठित साम्राज्य के विरोध में बर्दाशत करना असंभव हो जाए।"[4] साहित्य का यह स्वभाव रहा है कि जहाँ भी मनुष्यता पर संकट आया; इसने अपना प्रतिरोध दर्ज करवाया। प्रतिरोध की गुंजाइश ही लोकतंत्र को अन्य व्यवस्थाओं से बेहतर बनाती है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में साहित्य की भूमिका ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि लोकतंत्र में साहित्य का कार्य मनुष्य में स्वतंत्रता की समझ तथा दायित्वबोध विकसित करना है। जहाँ लोकतंत्र खतरे में पड़ जाता है, वहाँ साहित्य आगे बढ़कर दायित्व उठता है। अगर समाज लोकतंत्र की कसौटी है तो लोकतंत्र की कसौटी साहित्य है। अतः समाज और देश के पक्ष में लोकतंत्र को बचाने की चुनौती साहित्य की है।

भारत में जब 25 जून 1975 को आपातकाल लागू कर दिया गया था। साहित्य की ईमानदारी एवं नैतिकता के लिए यह चुनौती भरा समय था। वक्त का तकाज़ा यह था कि लेखक आगे बढ़कर साहित्य के पक्ष से अपना प्रतिरोध प्रकट करें। साहित्य की 'कहानी' विद्या ने इस दुर्घटना को कैसे जाँचा परखा और प्रश्न उठाया यह महत्वपूर्ण है। यह मूल्यांकन जरूरी है कि कहानी में आपातकाल किस तरह का है। एक लेखक का कर्तव्य था इस अमानवीय घटना का पुरजोर विरोध; जिसे लोकतंत्र की रक्षा की जा सके। साहित्य का लोकतंत्र 'करूणा' प्रकट करना नही था बल्कि उसका स्तर होना चाहिए था अधिनायकत्व का प्रतिकार । इसे रघुवीर सहाय ने स्पष्ट किया है वह इस तर, "निरी करूणा भी सच्ची मानवीयता नहीं हो सकती। करूणा में अन्याय के प्रतिकार का बोध होना चाहिए। तभी उसका और मानव जीवन का कोई ऐतिहासिक अर्थ होता है।"[5]

स्पष्ट है कि किसी भी देश का साहित्य वहाँ के सामाजिक सांस्कृतिक एवं राजनीतिक पक्षों का यथार्थ चित्रण होता है। हमारे भारत में स्वाधीनता के पश्चात हिंदी साहित्यकारों की भूमिका अत्याधिक महत्वपूर्ण हो गई। जन–जीवन के सपनों में बाधक बने तत्वों और सामाजिक एंव राजनीतिक भहकावों को साहित्ययकारों ने जीवंत रूप में साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत किया। अपने युग को चित्रित करने तथा सामाजिक , राजनीतिक चेतना को अभिव्यक्त करने का महत्वपूर्ण कार्य हिंदी साहित्यकारों ने किया है।

टाज के लोकतंत्र और साहित्य पर विचार–विमर्श करना वर्तमान युग में आए परिवर्तन को देखते हुए अनिवार्य हो गया है। "जनतंत्र और साहित्यकार ऐसा आवश्यक और महत्वपूर्ण विषय है कि जिस पर विचार करना आवश्यक है। किसी विषय को महत्वपूर्ण होना उसकी जीवंतता का निदर्शन करता है। जीवंतता समाज सापेक्ष है, इसलिए समाज के अन्य विषयों के साथ जनतंत्र और साहित्यकार पर विचार करना हमारे अपने सामाजिक सरोकारों की गवाही देता है। इस विषय पर कई प्रकार से विचार हो सकता है। लेकिन सवसे अधिक जरूरी मै यह मानी हुँ कि जनतंत्र और साहित्यकार के परस्पर संबंधों पर बातचीत की जाये और जनतंत्र में साहित्यकार की भूमिका तय की जाये। वास्तव में ये ऐसे विषय है कि जिन पर लंबे समय से बहस चल रही है, परंतु कोई निश्चित निष्कर्ष हमारे सामने नही आ पा रहे है।"[6]

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
E- ISSN 2582-5429 / SJIF Impact- 5.67 / January 2024 / Special Issue 10 / Vol. II (A)

आपातकाल पर उसकी अनिवार्यता का मूल्यांकन कई कहानीकारों ने किया जिसमें पंकज विष्टकी 'कवायद' कहानी, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की 'डायरी', प्रदीप पंत की 'आम आदमी का राव', मृदुला सिन्हा की 'जब–जब होहि धरम की हानी', दीप्ती खंडेलवाल की 'एक और कब्र' प्रमुख है। इन कहानियों के माध्यम से लेखकोंने समय के सच को ही नही परखा बल्कि इसकी पूर्व घोषणा भी कर दी थी। यह इन लेखकों की साहित्यिक ईमानदारी का ही एक सबूत था।

अपातकाल ने जनता के भरोसे को कैसे तोड़ दिया; इस बातकी पड़ताल इन कहानियों में हुई है। यह भरोसा 1947 में जनता और नेता ने एक दूसरे पर किया था। इसी भरोसे के बल पर अँग्रेजी शासन का विरोध कंधे से कंधा मिलाकर किया गया था। गांधीवादी विचारधारा ने आम आदमी की बेहतरी के सपने देखे थे। पर गांधी वाद से इत्तेफाक़ न रखने वालो लोगों ने 'सफेद टोपी' के निची दिये अपने निजी सपने देखे जो कि सत्ता का सपना था। इस सपने का अर्थ था जनता की बदतर जिंदगी। आपातकाल की घटना ने इस सचको सिध्द कर दिया। गांधीवादी मूल्य बिखरे पड़े थे। सत्ता का नया सिध्दांत सामने आया, जो तानाशाही पर आधारित था।

देश की जनता स्वप्नलोक से दैत्यलोक में पहुँच गई। देश इमरजेंसी के नाखूनों में कब कैद हो गया जनता को इसका पताही नहीं चला। जो बाते इतिहास समझ कर भूली जा चूकी थी वे एक बार फिर इतिहास में दर्ज होने के लिए सामने खड़ी थी। आपातकाल की ये कहानियाँ अँग्रेजी शासन की याद दिला रही थी।''वास्तव में इन कहानियों में समय की सच्चाई बयाँ हुई है। सत्ता की निरंकुशता अब भी कायम थी। आज आदमी पर हो रहे अत्याचार इसका सबूत है।''[7] वर्तमान में साहित्यकार पर बहुत अधिक जिम्मेदारी है, क्योंकि वर्तमान सामाजिक, राजनैतिक एंव जनता की विचारधारा को साहित्यकार ही अपनी लेखनी के माध्यम से विस्तृत और स्पष्ट रूप से प्रस्तुत कर सकता है और साहित्य के माध्यम से ही जन–जन तक वर्तमान समय में व्याप्त सामाजिक, राजनैतिक विचारधाराएँ गंभीरता एवं स्पष्टता के साथ पहुँचती है। जनतंत्र की पहचान जनता के सुख–दुःखों से होती है। आज भी भारत में स्वाधीनता की इतनी सदी गुजर जाने के बाद भी लोग जनतांत्रिक अधिकारों के लिए तरस रहे है। आज भी भारत में गरीब और अमीर के बीच का खाई बहुत गहरी और चौड़ी है। बहुत बड़ा आबादी निरक्षर है और ऐसे हालात में हम निरक्षर जनता से यह कहें कि वे स्वतंत्र लोकतांत्रिक देशके निवासी है, और उन्हें अपने जनतांत्रिक अधिकारों के लिए सजग रहना चाहिए यह सरासर गलत है। फणीश्वरनाथ रेणु ने अपने प्रख्यात उपन्यास 'मैला आँचल' में कहा था कि, ''गरीबी और जहालत दो ऐसी बीमारी है, जिन्हें दूर करना बेहद जरूरी है।'' ये बीमारियाँ कितनी दूर तक जा सकती है यह हमस ब समझ सकते है। निर्धनता, जातिवाद, स्त्री शोषण, सामाजिक वैमनस्य, प्रांतवाद, सांम्प्रदायिकता, निरक्षरता ऐसे अनेकों चुनौतियों का सामना आज भारतीय जन–मन को करना पड़ रहा है। इन समस्याओं के साथ हम किस प्रकार आज के लोकतंत्र में अपने को स्वतंत्र समझे और किस प्रकार इन समस्याओं से मुकाबला करें। ऐसे विषयों पर साहित्यिक रचना करना साहित्यकार के लिए एक बड़ी चुनौती है।

प्रेमचंद ने अपनी प्रसिध्द उपन्यास 'गोदान' में जिस जिंदगी से परिचय कराया था, वह आज के समय में किस हद तर बदली है, इस बात से हम अंजान नही है। सरकारों के बड़े–बड़े दावों के बावजूद गरीबी की समस्या हमें लगातार परेशान कर रही है। हम सिर्फ ''भारत उदय'' और ''जय हो'' के नारे ही सुनते रह जाते है विभिन्न सरकारें रोजगार गारंटी योजना, गरीबी रेखा से नीचे के परिवारों को आवासीय प्लॉट, सस्ते आटा–दाल आदि की आपूर्ति आदि जैसी योजनाओं पर अरबों रूपये खर्च कर रही है।'' यह पैसा सरकारी खजाने में करदाता की कमाई के हिस्से के रूप में आया है। यह देखना उचित होगा कि गरीबी दूर करने की सरकारों की कोशिशे वास्तव में कितनी सही और कामयाब रही है।''[8] स्पष्ट है कि सरकार द्वारा विकास पर खर्च किया जाने वाला पैसा सही पात्रों पर पहुँचते–पहुँचते आधे से कम रह जाता है और कई स्थानों पर यह पैसा पात्रों तक पहुँच ही नहीं पाता। इसलिए सरकार की अधिकांश योजनाएँ कागजी बनकर रह गई है। स्वाधीनता के पूर्व हम भारतीय अंग्रेजों के गुलाम थे इसलिए अत्याचार, शोषण का शिकार हुए, किंतु आज के परिप्रेक्ष्य में देखे जो स्वतंत्र भारत में रहते हुए भी हम अपने ही चुने हुए सरकार के भ्रष्टाचार के शिकार है । स्वतंत्रता के पूर्व लोगों के मन में यही आस थी कि अंग्रेजों को भगाकर हम अपनी सरकार बनाएँगें जिसमें जिस सरकार में हमारे अपने भाई और हम राज करेंगे, जिसमें हर प्रकार की स्वतंत्रता सभी को प्राप्त होगी, कोई किसी का हक नही मारेगा।

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
E- ISSN 2582-5429 / SJIF Impact- 5.67 / January 2024 / Special Issue 10 / Vol. II (A)

आपातकाल में लिखी कई कहानियाँ उस समय के यथार्थ को ही बयान नही करती बल्कि उसमें आज की वास्तविकता भी विद्यमान है। सत्ता के दबाव ने सरकारी कर्मचारियों को अत्याचार की खूली छूट दे दी है। योजना की सफलता के लिए आम आदमी पर जुल्मों की बाढ़ सी आ गई। अपने नीजी स्वार्थ के लिए इस अत्याचारी यज्ञ में बढ़–चढ़ की आहुतियाँ डाली जा रही है। जनता की आहें साहित्य के पन्ने पर आज भी सिसकी लेती नजर आती है। अव्यवस्था का यह आलम कि आम आदमी बाहर से अराजकता का शिकार हुआ तो अंदर से भी अराजक होता जा रहा है। इस अराजक समय को कहानियों ने अपने ढंग से समझा और उसे समस्या के रूप में प्रस्तुत किया।

लोकतंत्र समय एवं समाज के परिवर्तनों को समझना एवं उसे दिशा देने का महत्वपूर्ण कार्य साहित्य का होता है। साहित्य के दिखाई रास्ते पर ही समाज बढ़ता है। समाज पर आये संकट का माकूल जवाब साहित्य देता है। जब समाज को साहित्य की सबसे ज्यादा आवश्यकता थी, उस समय यह मौन रहा और आज भी है। आपातकालने समय को सच को भी कैद कर दिया था और आज भी कैद है। समय के सच्चे दस्तावेज न लिखे जाए इसके लिए लेखकों भी निशाना बनाया गया। वर्तमान में भी साहित्यकारों गोलियों से भूना गया। हाल ही में किसान आंदोलन की बाजू रखने वाले साहित्यकारों को धमकाया गया। विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की कहानी 'डायरी' आपातकाल पर लेखकों के पक्ष का बयान है। साहित्य का कार्य समाज के सच का उद्घाटन है। समाज में आई शिथिलता को साहित्यकार ऊर्जा प्रदान करते है। किंतु जब समाज गहरे संकट में फंस जाये तो उस समय साहित्य का कार्य 'विकल्प' प्रदान करना है। जब स्थितियाँ ज्यादा जटिल हो गई वो आम आदमी उम्मीद भरी नजरों से साहित्य की ओर निहारने लगा। साहित्य ने अपने तरीके से इस समस्या के हल दिये। आलोच्य कहानियों की यह सबसे बड़ी विशेषता रही कि उन्होंने उस पूरे समय की संवेदना को परखा साथ ही साथ उन्होंने अपने विकल्प भी दिये है।

कहानीकारों ने समचे समय की संवेदना को समझा जाना एवं अपना विकल्प भी प्रस्तुत किया। यद्यपि पूरा समय अराजक था किंतु कहानियाँ पूरे संयम के साथ एक–एक पक्ष को स्पष्ट करते हुए बढ़ी है। आपातकाल को व्यक्त करने की हड़बड़ी इन कहानियों में कहीं नही दिखती। पूरी लेखकीय 'ईमानदारी','साहस' एवं 'धैर्य' के साथ इन कहानीकारों ने आपातकालीन समय का सिलसिलेवार व्यौरा समाज के सामने प्रस्तुत किया है। साथ ही साथ आपातकाल पर साहित्यिक बिरादरी के मौन रहने के कलंक से भी बरी करवाया है। जैसा कि 'डायरी' कहानी में विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने स्वंय स्वीकार किया है, ''जब एक आदमी नंगा होता है, तो वह अकेला नही होता। उसकी पूरी जाति नंगी होती है, उसकी पूरी संस्कृति।''[9]

स्पष्ट है कि साहित्यकार का जनतंत्र व्यापक होता है, वह मनुष्यता की सभी लड़ाइयों को अपनी पूरी शक्ति के साब लड़ता है । प्रेमचंद ने कहा था कि, ''साहित्य राजनीति के आगे चलने वाली मशाल है।'' किंतु आज के लोकतंत्र में साहित्यकार की मनोवृत्ति बदल चुकी है। साहित्यकार साहित्यिक पुरस्कार पाने, पद पाने, अर्थ पाने तथा अन्य लाभ के लिए साहित्यिक रचना कर रहा है। अपने कर्तव्य से भटकते हुए व्यर्थ का श्रम कर रहा है। आज निकलने वाली साहित्यिक पत्रिकाओं से ज्ञात होता है कि सचमुच कुछ मात्रा में ही उत्कृष्ट साहित्यकार और साहित्य है। साहित्य सिर्फ लोकतंत्र को ही नही बल्कि साहित्य के लोकतंत्र को भी बचाया है। यद्यपि यह लोकतंत्र की विडम्बना थी की लोकतांत्रिक देश में अभिव्यक्ति पर पहरे लग गये। किंतु यह साहित्य की विडम्बना बन जाती अगर उसका प्रतिरोध दर्ज न होता। अत; प्रस्तुत कहानियों ने लोकतंत्र, समाज के साथ–साथ साहित्य को बचाने का भी महत्वपूर्ण कार्य किया है।

टाज लेखक श्रीहीन होता जा रहा है। साहित्यकार की आज राजगरहकर चुनौतियों से ना घबराते हुए उठकर उसका सामना करने की आवश्यकता है, क्योंकि साहित्यकार सदैव विरोध में खड़ा होता है इसलिए उसकी आवाज ताकतवर होती है। हर युग का साहित्य अपने युग की सही गवाही देता है, इक्कीसवीं सदी को हमें भी यही गवाही देनी है, इसलिए हमारे उपर दायित्व और अधिक व्यापक है। उन्हें पूरा करे हम सच्चे मनुष्य और सच्चे साहित्यकार बने रह सकते है। यह बात केवल याद करने की नहीं, जीवन में उतारने की है। साथ ही लोकतंत्र एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के साथ उसकी सीमा का तय होना भी आवश्यक है। इन दोनों में पूरकता के संबंध को स्वीकार करते हुए बढ़ावा देने की आवश्यकता

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
E- ISSN 2582-5429 / SJIF Impact- 5.67 / January 2024 / Special Issue 10 / Vol. II (A)

हैं, ताकि राष्ट्र लगातार प्रगति के रास्ते पर अग्रेसर हो सके, समाज समावेषी बने एवं विश्व में भारतीय संविधान जो कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता हेतु प्रसिध्द है, की गरिमा बरकरार रहे।

संदर्भ :-

1. अटल बिहारी वाजपेयी–पत्रकार तवलीन सिंह–दरबार–1977 दै.भास्कर.
2. कोलख्यान प्रफुल्ल, साहित्य, समाज और जनतंत्र–आनंद प्रकाशन, प्र. सं. 2004, पृ.27.
3. दुष्यंत कुमार रचनावली भाग–4, पं.सं.विजय बहादुरसिंह किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली–सं. 2008, पृ.476–477.
4. अर्थात–रघुवीर सहाय, राजकमल प्रकाशन–नई दिल्ली से 1994 पृ.7.
5. वे और नहीं होंगे जो मारे जायेंगे–रघुवीर सहाय–नेशनल पब्लिसिंग हाऊस नई दिल्ली, प्रथम संस्करण,–1983.
6. पालीवाल शोभा–लोकतंत्र और साहित्यकार–साहित्यगार, जयपुर–सं. 2002 पृ.क्र.7.
7. इस भले आदमी का कसूर क्याा है? इसने ऐसी क्या है–जलते हुए डेने–पृ.178.
8. सुराना पी.के. लोकतंत्र की सबसे बड़ी चुनौती–मार्ड इंडिया डॉट कॉम–मार्च 21, 2011.
9. वागर्थ, सं.एकान्त श्रीवास्तव–अगस्त 2014, पृ.71.